an>

Tilte: Need to undertake research to augment production of female bovine population through artificial insemination in the country.

श्री सी.आर.चौधरी (नागौर) : भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार पशुपालन और कृषि है। भारत के दुग्ध उत्पादन में गाय व भैंस का सबसे ज्यादा योगदान होने की वजह से ये दोनों पशुपालन के अनिवार्य अंग हैं। भारत सरकार के पशु विभाग की पशु संख्या सूचना के अनुसार देशी व शंकर नस्लीय गौवंश 19 करोड़ की संख्या केसाथ विश्व में पृथम स्थान पर है। परंतु इतनी बड़ी पशु संख्या होने के बावजूद भी उत्पादन में कमी की वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। पुराने समय में नर व मादा पशु दोनों पशु समान उपयोग में आते थे परंतु स्वचालित यंत्रों के उपयोग में आने से कृषि में नर पशुओं की उपयोगिता घट गई है। यद्यपि भारत में दुग्ध उत्पादन के लिए शंकर/बाहरी नस्ल की गायों को अपनाया गया है लेकिन जुताई व प्रजनन में अक्षमता तथा गौवंश संहार पर प्रतिबंध की वजह से इनके नर पशुओं की उपयोगिता कम रह गई है। इसलिए इनके नर बछड़ों को पशुपालकों द्वारा आवारा छोड़ा जा रहा है जो कि भूख एवं अप्राकृतिक कारणों से मर रहे हैं तथा वे खड़ी फसलों को भी नुकसान पहुंचाते हैं।

भारत सरकार के सर्वेक्षण के अनुसार इन नर बछड़ों के कारण प्रतिवर्ष लगभग 20 हजार करोड़ रूपये का आर्थिक नुकसान किसानों को हो रहा है। अतः उपरोक्त समस्याओं के निवारण हेतु वीर्य लिंग निर्धारण (Sperm Sexing) जैसी जैव तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। यह तकनीक विकसित देशों में पशु प्रजनन की अत्यंत प्रभावशाली तकनीक के रूप में उभरकर आई है जिसके तहत शुक्राणुओं में से X एवं Y गुणसूत्र (chromosome) को पृथक कर वांछित लिंग के बछड़े पैदा किए जा सकते हैं। परंतु भारत में इस तकनीक के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। वर्तमान में हमारा देश sexed semen विदेशी कंपनियों से उच्च कीमत पर खरीदता है जो आम किसान की पहुंच से बाहर है।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से आग्रह है कि भारत सरकार को इस महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट में बड़े स्तर पर पूंजी निवेश कर अनुसंधान को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा साथ ही विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग (collaboration) तथा अधिक से अधिक भारतीय छात्रों को छात्रवृति प्रदान कर बाहर के विश्वविद्यालय में रिसर्च के लिए भेजा जाना चाहिए। अगर भारत सरकार यह कर पाई तो आने वाले समय में हम द्वितीय "श्वेत क्रांति" को लाने में सक्षम हो पाएंगे।